Vol.10 July'17 No.12
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदो ऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

जीवन सुख आधार

-रमेश बाबू शर्मा 'व्यस्त'

बिना शक्ति के भक्ति का, होता कब गुणगान।
दुर्बल बेचारा सदा, घुट सहता अपमान।।1।।
बुद्धिहीनता से मनुज, बना रहे लाचार।
पर-जीवी बनकर जिए, सहे नित्य दुत्कार।।2।।
पशुबल टिकता नहीं, बुद्धिबल ही जग सार।
मान दिलाता व्यक्ति को, केवल सद्-व्यवहार।।3।।
कुमति गिराती व्यक्ति का यश-वैभव-किरदार।
कलह निरन्तर बींधती, करती बंटाढ़ार।।4।।
चतुराई छिपती नहीं, जिसके तनिक न पाँव।
अविश्वास पल-पल बढ़े, मिले न शीतल छाँव।।5।।
शत्रु न करते तनिक भी, क्षमा दया न पनाह।
बिन शक्ति के हर मनुज, रहता सदा तबाह।।6।।
घाटे के दुर्दिनों में, बढ़े क्लेश-विद्वेष।
केवल निज हित ताकना, करे ध्वस्त परिवेश।।7।।
साथ निभाते सुजन का, पाते सुख सन्तोष।
विग्रह जो पैदा करें, झेलें जन-आक्रोश।।8।।
मेल-जोल सद्भावना, सुमति प्रगति के द्वार।
'व्यस्त' कलह दुर्भाव से, हो न कभी उद्धार।।9।।

सत्यासत्य

- मनमानी बात मानना मानवधर्म नहीं है। प्रमाणों से सिद्ध बात को मानना ही धर्म है। यही सत्यासत्य के ग्रहण-त्याग का अर्थ है।
- मन की चंचलता रुकने पर सत्य-असत्य, कर्तव्य-अकर्तव्य, न्याय-अन्याय, ठीक-ठाक दिखते हैं।
- जिसे किसी भी प्रकार का भय रहेगा, वह पूर्ण सत्यावादी हो ही नहीं सकता।

-स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

Brahmarpan July'17 Vol. 10 No.12
आषाढ़-श्रावण 2074 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer
Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

CONTENTS

1. जीवन सुख आधार 2
-रमेश बाबू शर्मा 'व्यस्त'
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 7
-डॉ. भारत भूषण
4. डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का संक्षिप्त परिचय 8
-डॉ. विवेक आर्य
5. हिन्दुत्व प्रेमी जनता और नेताओं से 11
-आचार्य प्रेमभिक्षु
6. गोरक्षा तथा गो-पालन 16
-भारतभूषण विद्यालंकार
7. यह आतंकवादी हिंसा थमने की नहीं 19
-हरिकृष्ण निगम
8. आप ईमानदार आम आदमी हैं ?25
-राजेश कालरा
9. तब के व अब के आर्य समाजी27
-इन्द्रजीत देव
10. झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता 31
-ललित गर्ग
11. Dayananda's Clarion Call 33
12. Dayananda - A Social Reformer with a Crusading Zeal 35
-Dr. S. Radhakrishanan

संपादकीय

वैदिक संस्कृति में भोग और त्याग का समन्वय

-भारत भूषण विद्यालंकार

नीचे इसे एक कथा के माध्यम से समझाया गया है- कहते हैं एक बार नारद श्रीकृष्ण के पास पहुँचे और प्रार्थना की कि मुझे अध्यात्मवाद का उपदेश दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा, चलो सैर कर आएँ, रास्ते में बातें करेंगे। चलते-चलते कुछ देर बाद एक गाँव के पास पहुँचे। श्री कृष्ण ने नारद से कहा, प्यास लगी है, जाकर थोड़ा पानी ले आओ, मैं यहाँ पेड़ के नीचे बैठता हूँ। नारद जी गाँव के कुएँ पर गए तो देखा कि कुछ सुन्दर कन्याएँ घड़ों में पानी भर रही हैं। वे उन कन्याओं के पास खड़े हो गए। एक कन्या ने यह समझकर कहा कि ये प्यासे राहगीर हैं, उन्हें पानी पिला दिया। जब वह कन्या घड़ा सिर पर रखकर घर की ओर चली तो नारद जी उसके पीछे हो लिए। कन्या ने समझा कि परदेशी भूखा भी है इसलिए घर जाकर उन्हें बिठाया और थाली में खाना परोस दिया। खाना खाकर नारद जी वहीं बैठ गए। इतने में कन्या के पिता आ गए, तब उनकी नारद जी से बातें होने लगीं। समय देख कर नारदजी ने कहा- क्यों न मेरा इस कन्या से विवाह कर दो। पिता ने भी योग्य वर देखकर उस कन्या से उनका विवाह कर दिया। पिता के कोई पुत्र नहीं था। उसने कहा; तुम मेरे घर-बार की देखभाल करते रहो, यहीं रह जाओ। नारदजी वहीं रहने लगे और श्वसुर जी का काम देखने लगे। कुछ समय में बूढ़े

पिता का देहान्त हो गया। अब नारद जी उस संपत्ति के मालिक हो गए। इसी बीच उनके दो पुत्र हो गए। समय बीतता गया। इतने में अचानक एक दिन भीषण वर्षा हुई और नदी में बाढ़ आ गई। गाँव के सब लोग घरों को छोड़कर बाहर जाने लगे। नारदजी भी एक पुत्र को कन्धे पर बिठाकर, दूसरे की अंगुली पकड़कर स्त्री को साथ लेकर नदी पार जाने लगे। बाढ़ तेज हो गई और बेटे का हाथ छूट गया और वह बह गया। कुछ और आगे चले। पानी का एक धक्का आया; कन्धे पर जो बच्चा बैठा था वह भी नीचे गिर गया और बह गया। दोनों पुत्र हाथ से जाते रहे। अब वे स्त्री का हाथ पकड़े आगे बढ़े। चलते-चलते पानी की एक और उछाल आई और स्त्री का भी हाथ छूट गया। अब नारद जी हाथ-पाँव मारकर अपनी जान लिए नदी के पार आए तो उन्होंने श्रीकृष्ण को अपनी प्रतीक्षा करते हुए खड़े पाया।

नारद अब तक बूढ़े हो चुके थे। श्रीकृष्ण ने पूछा-कुछ पता लगा अध्यात्मवाद क्या है? नारद जी सिर पीटने लगे- किस काम के लिए गए थे, क्या करने लगे। किसी ने कहा भी है, - **'आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।'**

संसार को देखने की दो दृष्टियाँ हैं- भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद

संसार को देखने की दो दृष्टियाँ हैं। यद्यपि परमात्मा ने हमें दो आँखें दी हैं, परन्तु संसार की समस्या को हल करते समय हम एक ही आँख से देखते हैं। कुछ लोग बाईं आँख बंद करके दाईं आँख से देखते हैं, और कुछ दाईं आँख बंद करके बाईं आँख से देखते हैं। क्या देखते हैं? भौतिकवादी

दुनिया का वही पहलू देखते हैं जो स्थूल इंद्रियों से दिखता है- आँख, कान, नाक, त्वचा व जिह्वा से जो दिखता है वही भौतिकवादी देखते हैं। उनकी दुनिया वहीं तक सीमित है और इसी को वे यथार्थ मानते हैं। अधिकतर पश्चिम के लोग इसी दुनिया को आदि तथा अन्त मानते हैं, इसके आगे उनके लिए कुछ नहीं। इसके विपरीत अध्यात्मवादी दुनिया के उस पहलू को देखते तथा उस पहलू की बात करते हैं जो आँखों से ओझल है, छिपा है, अदृश्य के पीछे दृश्य के रूप में खड़ा है- जिसके लिए ईशोपनिषद् में कहा है-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

इस हिरण्मय चमचमाती दुनिया के पीछे वह छिपा है, जो दिखता नहीं। ऐ मेरे प्रभो! तुम अपने अप्रकट रूप को, जो पर्दे के पीछे छिपा है, बाहर लाकर मुझे दिखा दो। जैसे भौतिकवाद पश्चिम की देन है, वैसे अध्यात्मवाद पूर्व की, विशेषतः भारत की देन है।

परन्तु यह समझना कि भौतिकवाद यूरोप तथा अध्यात्मवाद का भारत से अटूट संबंध है, गलत धारणा है। यूरोप में भी अध्यात्मवादी हैं और भारत में भी भौतिकवादी हुए हैं। भारत में भौतिकवाद के प्रतिनिधि चार्वाक थे जिनका कहना था- **"यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा धृतंपिबेत्।"** (जब तक जीएँ सुख से जीएँ, ऋण लेकर चुपड़ी-चुपड़ी खाएँ। मरने के बाद कौन चुकाने के लिए वापस आएगा।)

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-114)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

आत्मा के नित्य व चेतन सिद्ध होने पर, आत्मा एक है, अथवा अनेक, यह आशंका बनी रहती है। सूत्रकार इसका समाधान अगले सूत्र में करता है, सूत्र है-

जन्मादिव्यवस्थातः पुरुषबहुत्वम्।।114।।

अर्थ-(जन्मादिव्यवस्थातः) जन्म आदि की व्यवस्था से (पुरुषबहुत्वम्) आत्मा का बहुत्व (अनेकता) सिद्ध होती है।

भावार्थ- यहाँ जीवात्म-चेतन का विवेचन है। सांख्य के सिद्धांत के अनुसार आत्मा एक नहीं, अपितु अनेक व अनन्त हैं। कारण यह कि प्रत्येक व्यक्ति में जन्म आदि की व्यवस्था अर्थात् भेद देखा जाता है। एक जन्म लेता है तो एक मरता है, एक सुखी है तो एक दुःखी है इत्यादि विविधता लोगों में देखी जाती है। यदि एक ही आत्मा हो तो इस प्रकार के भेद का होना असंभव है, उस अवस्था में सबको एक साथ जन्म लेना चाहिए और सबको एक साथ मरना चाहिए। एक समान सुख-दुःख की स्थिति रहनी चाहिए। अतः जन्म-मरण आदि की विविधता के आधार पर पुरुष का बहुत्व सिद्ध होता है। यद्यपि आत्मा अपरिणामी है, उसका जन्म-मरण संभव नहीं तथापि आत्मा का स्थूल शरीर के संपर्क में आना जन्म तथा शरीर से वियुक्त हो जाना मरण कहा जाता है।।114।।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव
(हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का संक्षिप्त परिचय

-डॉ. विवेक आर्य

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी महान् शिक्षाविद्, चिन्तक होने के साथ साथ भारतीय जनसंघ के संस्थापक भी थे जिन्हें आज भी एक प्रखर राष्ट्रवादी और कट्टर देशभक्त के रूप में याद किया जाता है। 6 जुलाई, 1901 को कोलकाता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के पिता श्री आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात् थे। बाल्यावस्था से ही उनकी अप्रतिम प्रतिभा की छाप दिखने लग गई थी, कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभा सम्पन्न डॉ. मुखर्जी ने 1917 में मैट्रिक तथा 1921 में बी. ए. की उपाधि प्राप्त की, जिसके पश्चात् 1923 में उन्होंने लॉ (Law) की उपाधि अर्जित की और 1926 में वे इंग्लैण्ड से बैरिस्टर बनकर स्वदेश लौटे, उन्होंने अपने ज्ञान और विचारों से तथा तात्कालिक परिदृश्य की ज्वलंत परिस्थितियों का इतना सटीक विश्लेषण किया कि समाज के हर वर्ग और तबके के बुद्धिजीवियों को उनकी बुद्धि का कायल होना पड़ा। अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देते हुए मात्र 33 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति का पदभार संभालने की जिम्मेदारी उठा ली। जल्द ही उन्होंने तत्कालीन शासन व्यवस्था और सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितियों के विशद जानकार के रूप में समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था, एक राजनैतिक दल की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के कारण जब बंगाल की सत्ता मुस्लिम लीग की गोद में डाल दी गई और

1938 में आठ प्रदेशों में अपनी सत्ता छोड़ने की आत्मघाती और देश विरोधी नीति अपनाई गई तब डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने स्वेच्छा से देशप्रेम और राष्ट्रप्रेम का अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तों के पक्के इंसान थे। संसद में उन्होंने सदैव राष्ट्रीय एकता की स्थापना को ही अपना प्रथम लक्ष्य रखा। संसद में दिए अपने भाषण में उन्होंने पुरजोर शब्दों में कहा था कि राष्ट्रीय एकता के धरातल पर ही सुनहरे भविष्य की नींव रखी जा सकती है। उस समय जम्मू काश्मीर का अलग झंडा था, अलग संविधान था। वहाँ के मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री कहलाते थे। लेकिन डॉ. मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने जोरदार नारा भी बुलंद किया कि एक देश में दो निशान, एक देश में दो प्रधान, एक देश में दो विधान नहीं चलेंगे। अगस्त 1952 में जम्मू की विशाल रैली में उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त किया था कि "या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊँगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर दूँगा।" जम्मू कश्मीर में प्रवेश करने पर डॉ. मुखर्जी को 11 मई, 1953 को शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली सरकार ने उन्हें हिरासत में ले लिया था क्योंकि उन दिनों कश्मीर में प्रवेश करने के लिए भारतीयों को एक प्रकार से पासपोर्ट टाइप का परमिट लेना पड़ता था और डॉ. मुखर्जी बिना परमिट लिए जम्मू कश्मीर चले गए थे, जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर नजरबंद कर लिया गया और वहाँ

गिरफ्तार होने के कुछ दिन बाद ही 23 जून, 1953 को रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।

वे भारत के लिए शहीद हो गए और भारत ने एक ऐसा व्यक्तित्व खो दिया जो राजनीति को एक नई दिशा दे सकता था। डॉ. मुखर्जी इस धारणा के प्रबल समर्थक थे कि सांस्कृतिक दृष्टि से हम सब एक हैं, इसलिए धर्म के आधार पर किसी भी तरह के विभाजन के वे सख्त खिलाफ थे। उनका मानना था कि आधारभूत सत्य यह है कि हम सब एक हैं। हम में कोई अन्तर नहीं है, हमारी भाषा एक है, हमारी संस्कृति एक है और यही हमारी विरासत है, लेकिन उनके इन विचारों और उनकी मंशाओं को अन्य राजनैतिक दलों के तत्कालिक नेताओं ने अन्यथा रूप से प्रचारित-प्रसारित किया। लेकिन इसके बावजूद लोगों के दिलों में उनके प्रति अथाह प्यार और समर्थन बढ़ता गया। भारतीय इतिहास में उनकी छवि एक कर्मठ और जुझारू व्यक्तित्व वाले ऐसे इंसान की है जो अपनी मृत्यु के इतने वर्षों बाद भी अनेक भारतवासियों के आदर्श और पथप्रदर्शक हैं।

सुविचार

- सहनशील, सत्यग्राही, व्यक्ति ही योग मार्ग में आगे बढ़ सकता है।
- स्थूलबुद्धि से सूक्ष्मबुद्धि, आचरण न्यूनता से उत्कृष्ट आचरण व ज्ञान, कर्म, उपासना में गति होते जाने से व्यक्ति महान् बन जाता है।
- सदा मृत्यु को देखने वाला व्यक्ति तेजी से सोचता है, तेजी से करता है। फलतः लक्ष्य की ओर तीव्र प्रगति होती है।

-स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

हिन्दुत्व प्रेमी जनता और नेताओं से!

-आचार्य प्रेमभिक्षु, वेद मंदिर-मथुरा

वैदिक युग का श्रीराम और श्रीकृष्ण के युग का 'आर्य' समाज जो आज का 'हिन्दू' समाज है, वह रोगी है और इस रोग ने धीरे-धीरे सन्निपात का रूप धारण कर लिया है। ऐसी स्थिति में हिन्दुत्वनिष्ठ जनता और उसके नेता चिन्तित हों, यह स्वाभाविक है। आर्यसमाज, रा. स्व. सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, राम राज्य परिषद, विराट् हिन्दू समाज, हिन्दू मंच, हिन्दू रक्षा समिति और हिन्दू सभा आदि अनेक हिन्दुत्वनिष्ठ संस्थायें और उनके नेता इसे स्वस्थ-सबल और सक्षम बनाने के लिए उपचार में जुटे हैं, किन्तु स्थिति यह है - "मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की"

आखिर ऐसा क्यों है? कारण बहुत स्पष्ट है - रोग का निदान किये बिना उपचार करने का प्रायः यही दुष्परिणाम होता है। क्या कभी हमारे इन हिन्दू हितैषी संगठनों के सम्मान्य नेताओं ने गहराई से उन कारणों का पता लगाने का यत्न किया है, जिन कारणों से यह हमारा विश्व गुरु भारत, विश्व का चक्रवर्ती सम्राट् भारत, वह भारत जिसे कभी 'सोने की चिड़िया और 'पारस बटिया' कहा जाता था, इतना दीन-हीन और क्षीण कैसे हो गया? सदियों की यह दासता हमारे यहाँ कैसे आई और आज भी हमारी यह दयनीय दशा क्यों है? आयें, चिकित्सा के पूर्व रोग का निदान करें।

विश्व की सबसे प्राचीन इस महान् आर्य (हिन्दू) जाति और अपने महान् भारत के इस घोर पतन और पराभव के अनेक कारण हैं, जैसे- वैदिक वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जन्मगत जाति-पाँति और तज्जन्य छुआछूत की गर्हित मान्यता। राष्ट्रशक्ति की मूलाधार, राष्ट्र-यज्ञ की 'ब्रह्मा' मातृ शक्ति या नारी समाज का अपमान, अवज्ञा और अवहेलना। एक ईश्वर या उपास्यदेव-ओ३म् के स्थान पर अनेकेश्वरवाद या बहुदेवतावाद की स्वीकृति, एक धर्म ग्रन्थ-वेद के स्थान पर अनेक तथाकथित धर्म ग्रन्थों की मान्यता, एक गुरुमन्त्र-गायत्री के स्थान पर अनेक गुरुमन्त्रों की परिकल्पना, एक सांस्कृतिक नाम 'आर्य' को भुला देना, एक अभिवादन-नमस्ते के स्थान पर शत्-शत् अभिवादनों की स्वीकृति, आश्रम-व्यवस्था का परित्याग,

बाल-विवाह, बहु-विवाह, अनेक सामाजिक कुरीतियों धार्मिक पाखण्डों की स्वीकृति, संस्कारों और पर्वों में आई हुई विकृतियाँ, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के आधार पर शुद्धि और संगठन के अभियान का त्याग आदि अनेक कारण या लक्षण हैं, इस महारोग के। किन्तु इन सब कारणों का कारण या मूल कारण एक ही है- वेदों का त्याग। **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** - वेद ही समस्त कर्मों का कोष है (मनु.) वेदाचार ही सम्पूर्ण समस्याओं का एकमेव समाधान है:-

एकै साधे सब सधे, सब साधे-सब जाय।
जो तू सींचे मूल को फूले-फले अघाय।।

हाँ, वेद और केवल वेद ही आर्य (हिन्दू) जाति ही नहीं विश्व-जीवन का मूलाधार है। अब हमें जब यह ज्ञात हो गया, हमने यह निदान कर लिया कि पवित्र वेदों का त्याग ही इस महान् आर्य (हिन्दू) जाति के रोग के लक्षणों का मूल कारण है तो आर्य हम सभी एक स्वर से घोषित करें कि प्रभु की वाणी एकमेव वेद ही हमारा धर्मग्रन्थ है। अन्य मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों, गीता आदि आचार-संहिताओं विदुर नीति, चाणक्य नीति आदि नीतिग्रन्थों और रामायण-महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में जो वेदानुकूल है वही हमें ग्राह्य है और जो कुछ बीच के कालखण्ड (अन्धकार युग) में इनमें वेद-विरुद्ध मिलावट की गई है, वह हमें अमान्य है।

इस प्रकार इन ग्रन्थों में जहाँ-जहाँ भी जन्मगत जाति-पाँत की अवैदिक मान्यता है और इसी के आधार पर छूत-छात के पाप का समावेश किया गया है। ऐसे अंश हमारे इन ग्रन्थों से हम निकाल कर उन्हें शुद्ध अर्थात् वेदानुकूल बना लें। तब हमें वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड को जो वास्तव में प्रक्षिप्त है, पृथक् कर देना होगा तब तुलसी रामायण से बहुत सारा कबाड़ा दूर करना होगा और **"पूजिय विप्र शील गुणहीना, शूद्र न पूजिय वेद प्रवीना"** एवं **अधम ते अधम अधम अति नारी" सहज अपावन नारि** जैसी घोर अन्याय पूर्ण अवैदिक चौपाइयों को सर्वथा त्यागना होगा। मनुस्मृति आदि धर्म-ग्रन्थों में भी जहाँ-जहाँ जो कुछ वेद विरुद्ध है, प्रक्षिप्त अंश हैं उन्हें निकालना ही होगा।

हिन्दू समाज के उदर में विकृति है, यह उदर की विकृति ही

अनेक रोगों का कारण है। हमें उदर-शुद्धि के लिए यह कुञ्जल क्रिया अथवा वमन-क्रिया करनी ही होगी। **'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।'** हिन्दू समाज के स्वास्थ्य-लाभ का अन्य कोई मार्ग नहीं है।

अभी कुछ समय पूर्व हमें हिन्दू संगठन सम्बन्धी एक संगोष्ठी में भाग लेने का सुयोग मिला। चर्चा-क्रम में 'ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्०' मन्त्र की व्याख्या करते हुए शरीर के अंगों-मस्तक, भुजायें, पेट और पाँव की भाँति ही राष्ट्र के अंग-स्वरूप-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में परस्पर समानता, एकता, सद्भाव की बात जब हमने कही और छूत-छात को पाप बताया तो वे बोले कि मीनाक्षीपुरम् ज़ैसे काण्डों के घटित होने की स्थिति में आज आप यह सब कहते और इस प्रकार की व्याख्याएँ करते हैं, अन्यथा हमारे वर्ग पर तो सदैव से ही अत्याचार होते आये हैं। हमने इतिहास के उदाहरण देकर जब उन्हें समझाने का प्रयास किया कि वर्ण-व्यवस्था का आधार जन्म नहीं, गुण-कर्म-स्वभाव है, अन्यथा हम वाल्मीकि और वशिष्ठ को महर्षि जैसे बनते और ब्राह्मण एवं ऋषि-कुलोत्पन्न रावण शूद्र से भी पतित 'राक्षस' कैसे हो जाता? तो वे इन जीवन्त तथ्यों को सुनकर कुछ मौन हुए।

वे तुरन्त ही फिर बोले-राम ने शम्बूक का वध किया था क्या यह अत्याचार नहीं था? तब हमने मध्यकाल में ग्रन्थों में की गई मिलावट और प्रक्षेप की दुर्भाग्यपूर्ण कहानी बताते हुए कहा कि रामायण का उत्तर काण्ड सम्पूर्ण प्रक्षिप्त है। 'उत्तर' शब्द ही बताता कि यह बाद की रचना है। जब पवित्र वेद की ऋचाओं को भुलाकर अनेक अवैदिक ग्रन्थों की प्रतिष्ठा हिन्दू समाज में हो गई और नारी एवं शूद्र के प्रति हीनता का दृष्टिकोण (जो सर्वथा वेद के विरुद्ध और न्याय-विरुद्ध है) बना, तभी 'सीता वनवास और 'शम्बूक-वध' जैसे प्रकरण जोड़े गये। हमने उन्हें बताया कि 'सीता वनवास' नारी समाज के प्रति घोर अन्याय एवं असमानता का पापपूर्ण प्रकरण है, और शम्बूक वध की भाँति ही भगवान राम के पावन चरित्र पर घोर कलंक है। वे सन्तुष्ट हुए। हमारे प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि ग्रन्थों में की गई इस मिलावट को स्पष्ट रूप से स्वीकार करने और उन्हें

साहसपूर्वक निकाल देने पर ही हिन्दू समाज निरोग और स्वस्थ बन सकेगा, जीवित रह सकेगा अन्यथा ऊपर की लीपा-पोती या छुट-पुट उपचारों से कुछ बनेगा नहीं और बहुत शीघ्र ही हिन्दू समाज की यह 15 करोड़ की सम्पत्ति मुसलमानों, ईसाइयों और बौद्धों में बँट जायेगी।

हिन्दू सम्मेलन निर्णय ले

इस विवेचना के प्रकाश में अन्त में हिन्दू सम्मेलन के आयोजकों से हमें सबल शब्दों में निवेदन करना है कि केवल हिन्दू-हिन्दू भाई-भाई चिल्लाने से काम नहीं चलेगा। हिन्दुओं को यदि जीवित रहना है तो समय की पुकार को सुनना होगा और 1. इस भाई चारे की साख या प्रामाणिकता के लिये भेद-भाव मूलक अभी अंशों को अपने ग्रन्थों से निकालना होगा। 2. हर हिन्दू को शिखा (चोटी) और सूत्र (यज्ञोपवीत या जनेऊ आदि) अपने इन सांस्कृतिक चिह्नों को अनिवार्य रूप से धारण करना होगा। आज हिन्दू-हिन्दू चिल्लाने वाले संगठनों के स्वयंभू नेताओं में से अधिकांश के पास शिखा-सूत्र ही नहीं है! 3. हर हिन्दू को अंग्रेजी की दासता छोड़कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना होगा तथा प्रान्तीय मातृभाषाओं बंगला, गुजराती, तमिल, तेलुगू, मराठी आदि को भी अपनाना होगा। अपने घरों और व्यापारिक संस्थानों में से अंग्रेजी का काला मुँह करना होगा। परिवारों में से डैडी-पापा, मम्मी और चिण्टू-मिण्टू, आण्टी-अंकल आदि को निकाल बाहर करना होगा, साथ ही- 4. कम से कम दूसरों से ही एकता का पाठ सीखकर गम्भीर स्वर में कहना होगा-हम सबका एक उपास्यदेव-ओ३म्, एक धर्मग्रन्थ वेद, एक सांस्कृतिक नाम-आर्य, एक राष्ट्रीय नाम-हिन्दू, एक अभिवादन नमस्ते, एक गुरुमंत्र-गायत्री मंत्र एक राष्ट्रभाषा-हिन्दी और एक धर्म-वैदिक धर्म (सनातन धर्म या मानव धर्म) है। 'अनेकता में एकता' के भ्रान्त नारे को छोड़कर एकता के इन सप्त सूत्रों को अपनाना होगा। 5. गो-पालन या गो दुग्ध सेवन का व्रती

बनना तथा गो-हत्या के जघन्य पाप को मिटाने के लिए कृत संकल्प होना होगा। तभी हम आर्य (हिन्दू) जाति के अस्तित्व की रक्षा कर सकते हैं।

ध्यान रहे, आज प्रश्न मात्र धर्म-रक्षा और संस्कृति-रक्षा का ही नहीं अस्तित्व रक्षा का है। हमारे अस्तित्व को चतुर्दिक से चुनोतियाँ हैं। नये पाकिस्तान, ईसाई स्थान और खालिस्तान निर्माण के षड्यंत्र विदेशी शक्तियों के साथ साजिश कर पूरे वेग से चल रहे हैं, अरब और अमेरिका के डालरों के बल पर भगवान् राम और कृष्ण, बुद्ध और महावीर, शंकर और दयानन्द शिवा और प्रताप, गुरुनानक देव व बन्दावैरागी तथा ऋषि मुनियों की महान् संस्कृति को मिटा-कर इस विराट् हिन्दू समाज के इस्लामीकरण और ईसाईकरण की दिशा में लाखों मौलवी और ईसाई मिशनरी कार्यरत हैं। हमारी प्यारी-प्यारी गैया-मैया निर्ममता से कट रही है, हिन्दू और हिन्दी का पदे-पदे अपमान हो रहा है। लगता है जैसे हमारी स्वतन्त्रता वरदान के स्थान पर अभिशाप बन गई है। महारानी लक्ष्मीबाई और नेताओं, भगत और बिस्मिल सरीखे शत-सहस्त्र वीर-वीरांगनाओं के बलिदान जैसे व्यर्थ होकर रह गये हों। ऐसी भयावह स्थिति में हमें साहसपूर्वक उपयुक्त निर्णय लेने होंगे और इन निर्णयों की क्रियान्विति के लिये हमें भी वैदिक मिशनरियों, समर्पित वेद प्रचारकों की एक सेना ही खड़ी करनी होगी। परिवार नियोजन से हिन्दू को बचावें।

प्रभुदेव हमें शक्ति-भक्ति दें। हिन्दुत्व प्रेमी जनता और विभिन्न हिन्दू संगठनों के नेता जागें, संगठनों की अनेकता को भी मिटाकर एकता स्वीकार करें। वर्ण-व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था (वर्णाश्रमधर्म) को व्यवहार की वस्तु बनायें। तभी यह उद्घोष सार्थक होगा-

आज हिमालय की चोटी से हमने फिर ललकारा है।
हम हिन्दू, हम हिन्दी भाषी हिन्दुस्तान हमारा है।।

गोरक्षा तथा गो-पालन

गावः पवित्रं परमं गावो मांगल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः।।

-भारतभूषण विद्यालंकार

मानवजाति के विकास के इतिहास का अनुशीलन करने पर मालूम होता है कि मनुष्य नाना परिवर्तनों के पश्चात् वर्तमान अवस्था को प्राप्त हुआ है। गोजाति का सम्बन्ध मानव समाज के साथ आदि काल से है। गो आदिमवासी आर्यों की संस्कृति तथा सभ्यता का प्रधान अंश है और इसीलिए हमारे जीवन के साथ भी इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। डॉ. मैकडानल ने गोजाति के प्रभाव का चित्रण करते हुए लिखा है' कि "मानवजाति पर किसी भी पशु का उपकार की दृष्टि से इतना ऋण नहीं जितना कि गो-जाति का है।" आदि काल से भारतीय जीवन और विचारों में गो जाति का महत्त्व पूर्णरूप से ओतप्रोत है। इसी कारण से पुरातन वैदिक काल से अब तक निरन्तर इतनी अवनति के उपरान्त भी गो-जाति को परम पवित्र तथा सर्वपूज्य मातृपद प्राप्त है।

इतिहास का अध्ययन करने पर मालूम होता है कि ऐसे अनेकों उदाहरण विद्यमान हैं, जब राज्य की तरफ से गोहत्या को रोककर गोरक्षा के प्रयत्न किए गए।

आर्यों के शास्त्रों के अनुसार सच्चा हिन्दू धर्म ब्राह्मण को सबसे अधिक पूज्य समझता है क्योंकि उसके हृदय में प्रत्येक प्राणी के प्रति आदर और प्रेम की भावना होती है। यही गुण राजा में भी होना चाहिए। भारत का क्रमबद्ध इतिहास सिकन्दर के आक्रमण के बाद से उपलब्ध होता है और सम्राट् अशोक के राज्य काल में ही हम गोपालन तथा गोरक्षा के आन्दोलन में राजकीय सहायता पाते हैं। विशेष रूपसे अशोक के कलिंगयुद्ध के अनन्तर जिसमें हिंसा के ताण्डव-नृत्य को देख कर निर्दयी अशोक दयार्द्र हो उठा। उसके जीवन की दिशा एकदम बदल गई और प्राणीमात्र के प्रति उसकी सहानुभूति तीव्रतर होने लगी जिसका निर्देश एक शिलालेख से मिलता है

"Respect for living creature should be made firm" अर्थात् पशु-जीवन के लिए हमारे हृदय में सम्मान की भावना होनी चाहिए। यह तो सत्य ही है कि उसके शासन-काल में गोहत्या पूर्णतः निषिद्ध थी। तात्कालिक कौटिल्य के अर्थशास्त्र से इस बात की ओर भी संकेत मिलता है कि उस समय गोपालन शिक्षा का मुख्य अंश था तथा प्राणी मात्र को विशेषतः गौओं को किसी भी प्रकार का कष्ट देने पर कठोर दण्ड का विधान था। गोरक्षा तथा गोपालन का सम्पूर्ण श्रेय हमारे धर्म ग्रन्थों को है जिन्होंने गौ का माहात्म्य प्रतिपादित करके मनुष्यों के हृदयों में श्रद्धा तथा सम्मान का समन्वय किया, जिसके प्रभाव से मुगल बादशाह भी न बच सके। यहाँ तक कि औरंगजेब भी इससे पूर्णतया प्रभावित रहा और अकबर तथा बाबर का नाम इस विषय में विशेष रूप से स्मरणीय है।

वैदिकधर्म या वैदिक सभ्यता का रहस्य इडा, सरस्वती और मही या गौमाता, विद्यादेवी और पृथिवी माता इन तीन तत्त्वों में निहित है। यदि हम मूलतः विचार करें तो हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति के विशाल प्रासाद के निर्माण में गंगा, गाय और गायत्री आधार रूप से विद्यमान हैं। भारतीय संस्कृति के इतिहास में अन्य संस्कृतियों की तरह उतार चढ़ाव आते रहे हैं। कभी ईश्वर के रूप के विषय में नाना विचार धाराएँ हो गईं तो कभी प्रकृति और जीव के स्वरूप के विभिन्न मतभेदों के कारण विवाद खड़े हो गये। परन्तु हम अपने अथवा किसी भी देश के इतिहास में सार्वभौम सत्य गौ की पूजनीयता तथा उपकारिता के बारे में सन्देह नहीं पाते! इस वेद विहित आज्ञा पर सनातनी, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुसलमान तथा अन्य सभी मताबलम्बी, गौरक्षा और संवर्धन के लिए एक साथ नतमस्तक हो सकते हैं।

ईसाइयों के मत में जैनेसिस के प्रथम अध्याय में स्पष्ट कहा है कि "परमेश्वर कहता है, लो मैने साग-पात जो समस्त भूतल पर हैं और नाना प्रकार के वृक्ष जो विविध प्रकार के फलों से लदे हुए हैं तुम्हारे खाने के लिए पैदा किए हैं न

कि माँसादि" और इस विषय में हम इस्लाम को भी स्पष्टतः इसी का अनुमोदन करते पाते हैं।

"हरगिज नहीं पहुँचते अल्लाह के पास कुर्बानियों के गोश्त और उनके खून, अलबत्ता पहुँचता है अल्लाह के पास, तुम्हारा तकवा और परहेजगारी।।"

इसी प्रकार पारसी मत में भी गौ महिमा का वर्णन बड़े ही सुन्दर शब्दों में पाते हैं जैसा कि गौ माता की स्तुति प्रसंग में यस्न के दसवें अध्याय में कहा है।

"गौओं को नमस्कार! गउओं के लिए उत्तम शब्द पुकारें गौओ की उन्नति हो। गौओं को भोजन और अपच्छादन उचित रूप से प्राप्त हों ये सब पशु हमें भोजन देते हैं।"

इस प्रकार विदित होता है कि सभी मतमतान्तर गौमाता के लिए कैसी पवित्र भावना रखते हैं और ये सब आदेश वेद में भी कितने सुन्दर ढंग से वर्णित हैं।

वेदों में गाय की माता तथा वृषभ की पालक पिता के रूप में स्तुति है जिसे कि वेदों में निम्न प्रकार से कहाः-

गौर्मे माता ऋषभः पिता मे।
दिवं शर्म जगन्ती मे प्रतिष्ठा।।

लेकिन इसके विपरीत जब हम मध्ययुग के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो हम देखते हैं कि कुछ पिशाच, ब्राह्मण का चोला पहने वेदों में गोमांसभक्षण तथा यजन का विधान बताकर मानवजाति को अन्धकार के गर्त में ढकेल रहे थे तथा पशुधन हानि पहुँचा रहे थे जबकि हम वेदों में गौ-माता की स्तुति अघ्न्या नाम से पाते हैं जिसे निम्न मन्त्र से स्पष्ट देखते हैं-

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यनाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदिति वधिष्ठत।।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

यह आतंकवादी हिंसा थमने की नहीं

-हरिकृष्ण निगम

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद के दशकों में शायद यह पहला दौर होगा जब हमारा देश महसूस कर रहा है कि शासन-तंत्र से आतंक की चपेट से उबरने की उम्मीद करना मूर्खता है! देश लगातार इस अंदरूनी हमले को झेल रहा है, एक साधारण व्यक्ति भी भय और निराशा भरे वक्तव्य दे रहा है और स्पष्ट कह रहा है कि यदि इस मुद्दे पर अमेरिका जैसे मनोबल को हम नहीं दिखा पाएँगे तो राजनीतिक प्रपंचों से भरा राजनीतिक ढोंग हमें और प्रजातांत्रिक ढाँचे को जल्दी ही निगल जाएगा। हम कितना ही ऊपरी दिखावा करें हिंसा और दहशत के हिमायतियों ने सामाजिक समरसता को तार-तार करने की कोशिश की है। हम, एक बुनियादी अन्तर्विरोध का सामना फिर कर रहे हैं जहाँ संविधान को न मानने वाले या हिंसा, घृणा, दहशत और निर्बोध लोगों का संहार करने वालों को हमारे मीडिया का एक बड़ा वर्ग उनके शिकार हुए लोगों की अपेक्षा अधिक महत्त्व देता है। इस अनुत्तरदायी आचरण के लिए साक्ष्यों की जरूरत नहीं, यह लापरवाही और अराजकता, बौद्धिक विमर्श के चालू जन-सम्पर्कवाद, वृन्दवादन या आर्कस्ट्रेशन में लगभग प्रतिदिन अभिव्यक्त होता है। भूल जाइए कि आज की परिस्थिति में आतंकवाद के राक्षस पर नकेल लगाई जा सकती है। अनेक राजनीति के विश्लेषक इसे असुरक्षित, मनोबलहीन 'पिलपिला' राष्ट्र भी कहने लगे हैं जहाँ पिछले कई दशकों में मात्र निर्बोध जनता ही आतंकवादियों का निशाना बनी है, सुरक्षा-व्यूह में रहने वाले नेता नहीं!

अभी तक हर हादसे के तुरन्त बाद पाकिस्तानी जेहादी संगठनों के हाथ की चर्चा कर हमारे समाचारपत्र बहुधा देश

के भीतर पनपते आतंकवादियों 'होमग्रोन टेरेरिस्टों' के अस्तित्व को भी नकारते आए थे पर शायद पहली बार 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' ने गुजरात के हादसे के तुरन्त बाद 7 जुलाई 2008 को एक अग्रलेख में स्वीकार किया कि जिहादियों का भारतीयकरण हो चुका है। अभी तक लगता है इस कड़वे सच को वे मानने में भी झिझकते थे। एक साधारण नागरिक को वैश्विक आतंकवाद के नेटवर्क पर व्याख्याओं से कोई मतलब नहीं है। उसे तो सिर्फ अपनी जान की चिन्ता है जिसे भाषणबाजी या सम्पादकीय सलाह नहीं सुलझा सकती। क्या आज बिना किसी कड़ी या दुस्साहस भरी सुनियोजित पहल के हम इस खतरे में उबर सकते हैं? क्या प्रभावित राज्यों या केन्द्रीय सरकार की रटी रटाई प्रतिक्रियायें हमें आश्वस्त कर सकती हैं? क्या अपराधियों को सजा दिलाने में वर्षों लगाने से ऐसे भयावह हादसों में भी हमने अपनी न्याय प्रक्रिया का स्वयं मखौल नहीं उड़ाया है? क्या अपराधियों को सजा दिलाने में वर्षों लगाने से ऐसे भयावह हादसों में भी हमने अपनी न्याय प्रक्रिया का स्वयं मखौल नहीं करवाया है? हमारी सुरक्षा और जाँच एजेन्सियों की अक्षमता से हर नागरिक परिचित हो चुका है और यह बार-बार सिद्ध हो रहा है कि आतंकवाद विरोधी अभियान की असली प्रकृति की समझ भी हमें नहीं है। उनकी गतिविधियों, कार्यप्रणाली, प्रावधानों और मानवाधिकार के नाम पर प्रपंचों का फायदा मात्र आतंकवादी उठाते हैं। एक अक्षमता व असफलता से झूलते हुए हम उससे निष्क्रियता के दौर में पहुँच जाते हैं जहाँ पर किसी हादसे की पुनरावृत्ति पर हम नये सिरे से आदर्शवादी वक्तव्यों व भाषणों के गोरखधन्धे में अपने को फँसा लेते हैं। सभी को अज्ञात से डर लगता है, अगले मोड़ में छिपे

अदृश्य शत्रु की आहट उसे सुनाई पड़ती है। मात्र वक्तव्यों से उसकी विवशता की सरहदें टूटती रहेंगी। वह सुझाव भी देने की स्थिति में है पर हो सकता है उनमें से कुछ आज के विषाक्त राजनीतिक माहौल से सही न लगते हो। उसकी स्पष्टता व निजी ईमानदारी फिर भी उसके आक्रोश में झलकती है। ऐसे ही कुछ सुझावों का संकलन निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत हैं।

जाँच के लिए गुप्त कैमरों को सार्वजनिक स्थलों पर अधिकाधिक प्रयोग के साथ-साथ न्यायपालिका कार्यशालाओं-फोरोन्जिक लैब-की संख्या व गुणवत्ता भी बढ़ाई जाए जिससे साक्ष्यों की विश्वसनीयता के अभाव में गम्भीर आरोपी कानून की गिरफ्त से न बच पाएँ, जैसा आज कल बहुधा होता है।

केन्द्रीय स्तर पर वाहनों के दुरुपयोग करने वालों को कानूनी पकड़ में लाने के लिए एक 'डेटाबेस' संकलित करना, आतंकवादियों की सतर्कता से जाँच करने के लिए आवश्यक है। छोटे-छोटे रेस्टोरेन्टों के मालिकों, क्लबों को चलाने वाले दुकानदारों को, या विस्फोटकों के निर्माण में प्रयुक्त सामान का व्यापार करने वालों अथवा साइबर कैफे से जुड़े लोगों को समय पर अवांछित काम में लिप्त लोगों की सूचना देने के लिए प्रेरित किया जाए। आतंकवाद से जूझने के लिए सन् 2002 में बनाए 'पोटा' या उसके जैसे कानून बना कर हर नागरिक को स्पष्ट संकेत दिया जाए कि राष्ट्रद्रोह या हिंसा की नीतियों को सरकार समान रूप से कुचलने को कटिबद्ध है।

एक सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन सिर्फ आतंकवाद से निपटने के लिए केन्द्रीय स्तर की एजेन्सी के रूप में बनाया जाए जिसमें विशेषज्ञ हों, सैन्यबल हों, पूर्व सेनाधिकारी हों

और राजनीतिक प्रभाव डालने वालों को बाहर रखा जाए। इन्टरपोल की तरह संदेह के घेरे में आए आरोपियों व दण्डित अधिकारियों और अपराधियों और अपराधियों की केन्द्रीय नेटवर्क द्वारा सूचना उपलब्ध कराने की प्रणाली का विकास किया जाए। केन्द्रीय जाँच ब्यूरो को आतंक से जुड़े हर प्रकरण सौंपे जाएँ और उनका अधिकार क्षेत्र भी बढ़ाया जाए। निष्पक्ष, स्वतंत्र और सक्षम खुफिया तंत्र सरकार बनने, बिगड़ने या बदलने से अप्रभावित रहें और वह मात्र अपने स्वयं के गठित चार्टर के लिए उत्तरदायी रहे।

चाहे विपक्ष हो या सत्तादल के राजनीतिबाज या मीडिया के स्वयंभू कर्णधार यदि वे न्यायिक या जाँच प्रक्रिया को बरगलाने की कोशिश करते हैं या किसी भी बहाने आतंकवाद को समर्थन देते हैं उनकी भी बारीकी से जाँच होनी चाहिए। इसी तरह न्याय-प्रक्रिया में मानवाधिकार व गैरसरकारी संगठनों के आवश्यकता से अधिक रुचि लेने के मूल कारणों की जाँच भी जरूरी है। उद्देश्य यह है कि आतंकवाद के लिए शक के दायरे में आए लोगों की जाँच में राजनीतिक हस्तक्षेप की खुलकर भर्त्सना होनी चाहिए। आतंकवाद के प्रच्छन्न समर्थकों के रूप में उन समाजकर्मियों एवं पत्रकारों पर निगरानी रखनी चाहिए जो उनसे व परिवार से नियमित रूप से सहानुभूति जताते हैं। इसी तरह आतंकवादी घटनाक्रम की जाँच में कानूनी प्रक्रिया में तेज़ी लाई जाए। उसे वर्षों तक लटकाने व चलाने वालों पर भी प्रश्न चिह्न लगाना अपेक्षित है। न्याय में देर करना न्याय न देने के बराबर है। या तो अपराधी को तुरन्त दण्डित किया जाए अथवा अपराध न सिद्ध होने पर उसे छोड़ दिया जाए, यह निष्पक्ष प्रक्रिया का तकाज़ा है।

पुलिस और जाँच एजेन्सियों को आरोपियों से पूछ-ताछ करने

में पूरी स्वतंत्रता दी जाए। 'ट्रायल बाई मीडिया' – विशेषकर दृश्य मीडिया की निर्णय पर पहुँचने की जल्दबाजी देश के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

संविधान को न मानने वाले या हिंसा में विश्वास करने वालों को न्यायिक प्रक्रिया की बारीकियों के बहाने या मानवाधिकार के नाम पर कोई छूट न दी जाए। राजनीतिक दलों के किसी भी वर्ग के तुष्टीकरण के एजेन्डा का पर्दाफाश भी अपेक्षित है। सारे अपराधी बिना झिझक के एक ही पलड़े में तोले जाएँ।

मानवाधिकार हनन के सतही आरोप या दुष्प्रचार के बल पर पुलिस अधिकारियों को दण्डित करना बंद किया जाए। किसी मंत्री के दबाव में नहीं बल्कि वैध जाँच प्रक्रिया के बाद में प्राकृतिक न्याय देते हुए, यदि आरोप सिद्ध होते हैं तभी दण्ड दिया जाए। पुलिस के मनोबल को गिराने वाले समाचारों की तह में भी पहुँचना जरूरी है। भारत-पाक शान्तिवार्ता के उत्साही समर्थकों पर भी कड़ी नज़र रखना जरूरी है क्योंकि वे हर आतंकवादी हमले का उद्देश्य मात्र इस प्रक्रिया को हानि पहुँचना ही कहते हैं। उन्हें नरसंहार और खून खराबे के पीछे बस यही लक्ष्य दिखता है।

देश का हर कोना आज असुरक्षित ही नहीं जैसे किसी अनहोनी का इन्तजार कर रहा है। बंगलौर के हादसे के मात्र एक दिन बाद अहमदाबाद के विस्फोटों की शृंखला ने सिद्ध कर दिया है कि आतंकवादी अपनी इच्छानुसार हमें जहाँ चाहें निशाना बना सकते हैं। चाहे मुम्बई हो या वाराणसी, जयपुर हो या मालेगाँव या नागपुर अब तक हमारा बड़बोलापन हमारे प्रजातंत्र का सिर्फ मखौल उड़ाता रहा है। क्या यह शर्मनाक नहीं है जब देश के सबसे बड़े अंग्रेजी दैनिक कहलाने वालों ने अपने मुखपृष्ठ पर 6-कालम

शीर्षक में लिखा यह हादसा 'मोदीलैण्ड' गुजरात में हुआ और शायद मुख्यमंत्री को उसकी करनी पर सबक सिखाया गया है। निर्बोध जनता की इस त्रासदी के क्षण में भी यदि हमारा प्रबुद्ध वर्ग अपनी घृणा न छिपा पाए तो देश कहाँ जा चुका है, हम समझ सकते हैं। यह भी लिखा गया है कि क्योंकि कर्नाटक और गुजरात दोनों भाजपा शासित प्रदेश थे इसलिए अगला निशाना मध्यप्रदेश भी हो सकता है। कुछ पत्रकार यह भी कह रहे हैं शायद यह घटनाक्रम गुजरात में होना ही था। यह वहाँ के वर्षों पहले के दंगों का बदला है। आज स्पष्ट है कि राष्ट्रविरोधी, सशक्त यद्यपि दिग्भ्रमित मीडिया के एक वर्ग ने आतंकवाद के दौर में एक नई पेचीदगी को जन्म दिया। इस नए शत्रु की पहचान और उससे निपटना एक नई मजबूरी है। फिलहाल इस गम्भीर मुद्दे पर हमारी नीतियाँ आत्मघाती हैं।

ए–2002, पंचशील हाईट्स,
महावीर नगर, कान्दिवली (प.)
मुम्बई–400067

उपासना

- मन संध्या में नहीं लग रहा है, इधर–उधर जा रहा है तो समझना चाहिए कि संसार की उपासना चल रही है।
- उपासना काल में जब व्यक्ति संध्या के मंत्रों का अर्थ शब्दशः न करके भावार्थ से ही काम चलाने लगता है तो यह आलस्य–उपेक्षा की शुरुआत है। धीरे–धीरे वह छोटे भावार्थ करता है। फिर केवल मूल पाठ करता है और हो सकता है आगे चलकर वह मूल पाठ को भी छोड़ दे।

–स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक

आप ईमानदार आम आदमी हैं?

-राजेश कालरा

चुनाव की घड़ी नजदीक आ पहुँची है और जाहिर है, करप्शन इस बार के चुनावों में अहम मुद्दा है। घोटालों की बाढ़ से त्रस्त आम आदमी इस बार भ्रष्टाचार की बहस में जितनी रुचि दिखा रहा है, वैसा इंटरेस्ट इसने पहले कभी नहीं दिखाया। आम आदमी के इसी इंटरेस्ट ने एक कामयाब ऐंटि-करप्शन मूवमेंट को जन्म दिया और आखिरकार ऐसी पार्टी बनी, जो अपने गैरपारंपरिक ढंग से ही सही, सत्ता और ताकतवर राजनीतिक ढाँचे को चुनौती दे रही है।

इस नौसिखुआ आम आदमी पार्टी से कितनी उम्मीदें लगाई जा रही हैं, इस बात का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब भी इसने जिस भी सीट पर अपने कैंडिडेट का ऐलान किया है, वहाँ से वही कैंडिडेट फिलहाल सबसे आगे मानी जा रही बीजेपी को टक्कर देता दिखता है, न कि काँग्रेस का।

इस सबके बीच असली नाम आम आदमी के लिए एक छोटा सा टेस्ट है, जिसके आधार पर यह तय किया जा सकता है कि वह खुद कितना ईमानदार है। जरा इन 10 सवालों के जवाब दीजिए:

1. क्या आप इन पर्सनल कामों के लिए ऑफिशल कार यूज करते हैं।
   - क. नॉन-ऑफिशल पार्टियों में जाने के लिए
   - ख. बच्चों को स्कूल छोड़ने के लिए
   - ग. शॉपिंग के लिए
   - घ. ब्यूटी पार्लर जाने के लिए
2. क्या आप पर्सनल कॉल्स के लिए अपने ऑफिस के फोन का यूज करते हैं और क्या उस फोन पर देर तक इसलिए बात करते रहते हैं, क्योंकि आपको इसके लिए कोई पैसे देने नहीं पड़ते?
3. क्या आप अपने पर्सनल प्रिंटआउट लेने के लिए ऑफिस के प्रिंटर का यूज करते हैं ताकि आपके पर्सनल

प्रिंटर की इंक और पेपर का खर्च बच जाए?
4. अगर आपका कोई रिश्तेदार आर्मी में है, तो क्या आप आर्मी कैंटीन से अपने लिए सब्सिडी वाले सूटकेस, फ्रिज, शराब, कार और दूसरी तरह के सामान लेते हैं?
5. अगर रेड लाइट जंप करने पर ट्रेफिक पुलिसकर्मी आपको रोकता है, तो
क. आप उससे छोड़ देने की रिक्वेस्ट करते हैं
ख. आप उसे छोड़ देने के बदले 'चाय-पानी का खर्च' देते है
ग. आप उसके द्वारा डाले गए फाइन को भरने के लिए तैयार हो जाते हैं
घ. अपने परिचय के बड़े नामों 'का सहारा लेकर उसे धमकाते हैं
6.ट्रेन का टिकट लेने के लिए आपको इंतजार न करना पड़े या फिर कहीं पर भी आपको आम आदमी के साथ लाइन में लगना पड़े, क्या इसके लिए आप अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मदद माँगते हैं?
7. क्या आपने कभी अपने दोस्त या किसी ऊँचे औहदे पर बैठे शख्स को अपना न्यूनतम किराया अपग्रेड करने या फिर गैर-अनुमोदित एयर टिकट को हायर क्लास टिकट में अपग्रेड के लिए कहा है?
8. क्या आपने कभी अपने ऑफिशल ट्रैवल अलाइंस को ऑफिस में कुछ और शो करके अपने जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के साथ बिताई छुट्टियों पर यूज किया है?
9. क्या कभी आपने ऑफिस में झूठे कन्वेएंस, मेडिकल या दूसरे क्लेम भरे हैं?
10. क्या आपने कभी अपनी शादी या फिर बच्चों की शादी में दहेज की माँग की है?
एक बार जब आप इन सवालों का जवाब दे देंगे, तो यह साबित करने के लिए आपको किसी और की जरूरत नहीं पड़ेगी कि आप कितने सदाचारी हैं। आपकी अंतरात्मा ही यह काम कर देगी।

तब के व अब के आर्य समाजी

-इन्द्रजीत देव

सन् 1946 ई. आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब की हीरक जयन्ती लाहौर में बड़ी धूमधाम से मनाई गई थी। तब सभा के प्रधान दीवान बदरीदास व मन्त्री महाशय कृष्ण थे परन्तु हीरक जयन्ती म. कृष्ण जी की अध्यक्षता में मनाई गई थी। तब इस सभा की एक पत्रिका 'आर्य' भी प्रकाशित होती थी जिस के सम्पादक पं. भीमसेन विद्यालंकार थे।

लाहौर आज पाकिस्तान में है परन्तु तब यह नगर आर्य समाज का गढ़ माना जाता था। लाहौर में आर्यसमाज के लगभग सभी विद्वान् मिल जाते थे क्योंकि वे वहाँ आते रहते थे। उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा के अपने उपदेशक व भजनीय लगभग 100 थे। सर्वश्री पं. लोकनाथ तर्क वाचस्पति, पं. गुरुदत्त स्नातक, पं. राम स्वरुप पराशर, पं. क्षितीश वेदालङ्कार पं. शिव कुमार शास्त्री, पं. चिंरजी लाल 'प्रेम' मौलाना सत्यदेव, पं. पूर्णचन्द, भजनीक, पं. बलराज, सङ्गीत विशारद, पं. भक्त राम, पं. वीरेन्द्र 'वीर', पं. अमरसिंह व पार्टी, दादा शिव नारायण स्वामी सुधानन्द स्वा. सुरेश्वरानन्द, स्वा. स्वतन्त्रानन्द, आचार्य प्रियव्रत व पं. सुखदेव जी आदि के नाम मुझे स्मरण आ रहे हैं। तब मैं भी इसी सभा में भजनोपदेशक के रूप में सेवा करता था। उपरोक्त सभी विद्वान् हीरक जयन्ती में उपस्थित थे। जयन्ती की सफलता हेतु धन-संग्रह करने का जब विषय आया तो यह निर्णय लिया गया कि यह काम सभा के मन्त्री महाशय कृष्ण करेंगे। वे पत्रकार शिरोमणि थे व उनकी लेखनी का प्रभाव विरोधियों पर भी गहरा पड़ता था। अर्थ-शुचिता के धनी महाशय जी ने अपने दैनिक पत्र "प्रताप" में एक लेख धन-संग्रह हेतु प्रकाशित किया। लेख प्रकाशित होते ही

जयन्ती मनाने के लिये अपार धन एकत्रित हो गया। उस समय के आर्यों की आर्य समाज के प्रति निष्ठा भी इस धन-संग्रह का एक कारण थी। बड़ी धूमधाम से यह जयन्ती मनाई गई थी। एक स्मारक ग्रन्थ स्वा. वेदानन्द तीर्थ के संपादकत्व में छपा था। पूरा विवरण मुझे आज भी स्मरण है। आर्य प्र. नि. सभा पंजाब की स्थापना हुए तब 60 वर्ष ही बीते थे परन्तु पाश्चात्य पद्धति के अनुसार हीरक जयंती इसी वर्ष मनाई गई। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब एक तिथि (दिन) पर अनेक उत्सव सम्पन्न करा देती थी। कारण यह था कि इसके पास बहुत अधिक उपदेशक होते थे व सभी मिशनरी भाव से प्रचार करते थे। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि तत्कालीन उपदेशकगण कड़ी मेहनत, ईमानदारी व निष्ठा से कार्य करते थे। एक नगर में एक दिन, दूसरे दिन दूसरे नगर में तथा तीसरे दिन तीसरे नगर में कार्यक्रम निपटाने पहुँच जाते थे हालांकि तब यातायात के साधन बहुत ही कम थे व सड़कें भी कच्ची होती थीं। अपना बिस्तर व बाजा-तबला लेकर उस समय हमें प्रचार करने पहुँचना होता था। पं. शान्ति प्रकाश, शस्त्रार्थ महारथी जी तो 3-3 वस्तुयें लेकर चलते थे- सिर पर बिस्तर, कपड़ों व पुस्तकों के थैले दोनों कंधों पर। आज कल तो आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्य अपने घरों में अथवा आर्य समाज मन्दिरों में उपदेशकों व भजनीकों के लिये बिस्तरों की व्यवस्था कर देते हैं परन्तु तब ऐसा न होता था। पं. शान्ति प्रकाश जी जब आयु में बड़े हुए तो लोग उनसे कहते थे- "पं. जी! आप अब वृद्ध हो गये हैं। आप कुली कर लिया करें।" "पं. जी' सहज ही उत्तर देते थे- कुली कर तो लूँ परन्तु मैं धीरे-धीरे चलता हूँ। कहीं कुली मेरा सामान ही लेकर न चल दे, इसलिये मैं कुली नहीं करता व अपना

सामान स्वयं ही उठाकर चलता हूँ।'

मुझे याद है कि आर्यसमाज, इस्माइलाबाद (कुरुक्षेत्र) का एक उत्सव था। यह स्थान शाहबाद से 16 मील दूर है। इस उत्सव में पं. शिवकुमार शास्त्री व पं. मुनीश्वर देव भी इसी प्रकार अपना सामान स्वयं उठाकर पहुँचे थे।

सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता, पं. यशपाल भी किसी आर्यसमाज या गुरुकुल में पहुँचते थे तथा तब यदि साईकिल अथवा बस का प्रबन्ध न होता था तो वे भी पैदल ही जाते थे।

एक बार डॉ. रामप्रकाश, पूर्व राज्य सभा के सदस्य के गाँव तंगौर (कुरुक्षेत्र) में मैंने उत्सव रखवाया था तथा वचन दिया था कि मैं भी उत्सव में अवश्य पहुँचूँगा परन्तु सभा ने उन्हीं तिथियों में पिपली के निकट एक अन्य गाँव में भेज दिया। तंगौर के आर्यजन अड़ गये कि मेरे बिना वे अपना उत्सव नहीं करेंगे। उस गाँव में उत्सव में पं. शान्ति प्रकाश, शास्त्रार्थ महारथी, पं. मुनीश्वर देव, पं. तेजमान जी को पिपली के निकट वाले गाँव में रात में ही भेजा गया। वे साईकल पर ही मुझे लेने आये। तथा रात में ही मुझे लेकर तंगौर में पहुँचे। तब अगली प्रातः तंगौर गाँव में आर्यसमाज का उत्सव उत्साहपूर्वक प्रारंभ हुआ।

आज जैसी सुविधायें व साधन तब कहाँ थे? परन्तु प्रचार अधिक व प्रभावशाली होता था। उपदेशक व भजनीक भी बहुत होते थे, वे गहन स्वाध्यायशील व आचरण में उच्च कोटि के थे। आज न कोई उपदेशक बनना चाहता है तथा न ही भजनीक। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रचार व प्रभाव भजनीकों का ही पड़ा था। आज वह लगभग ठप्प हो गया है। कुछ नगरों में दस-पंद्रह भजनीक हैं व वे भी अधिकतर नगरों में ही बुलाये जाते हैं। स्कूलों व कालिजों के

अध्यापकों व प्राध्यापकों से भी काम लिया जाने लगा है। जिनका वैदिक सिद्धान्तों से अधिक परिचय नहीं है। एक विद्वान् ने एक प्रोफेसर से पूछा - एक शब्द में आर्यसमाज का सिद्धान्त बताओ।"

प्रो. ने स्पष्ट बता दिया- "यह मैं नहीं बता सकता। कृपया आप ही बता दें।" विद्वान् ने कहा - "यह एक शब्द है, त्रैतवाद। इस में सब आ गया।" सुनकर प्रो. अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

पहले उपदेशक पुस्तकों के ट्रंक या थैले भरकर उत्सवों में पहुँचते थे तथा आर्यसमाज के मन्त्री या प्रधान ही उनको उपदेश करने का विषय देते थे व वे उन्हीं विषयों पर बोलते थे। यह उपदेशकों के गहन स्वाध्यायशील होने का प्रमाण है। लगभग सभी उत्सवों पर विधर्मियों से शास्त्रार्थ भी होते थे जिनमें गैर आर्यसमाजी श्रोता भी सुनने-देखने आते थे। आजकल न उपदेशक, न भजनोपदेशक ही सद् शास्त्रों का गहन अध्ययन करते हैं। आर्य समाजों के अधिकारी व साधारण सदस्य भी तब स्वाध्याय करते थे। आज आर्यसमाज से स्वाध्याय लुप्त होता जा रहा है जिसमें महर्षि व वेद के सिद्धान्तों से लोग अपरिचित होते जा रहे हैं। एक स्थान पर एक उपदेशक बता रहे थे कि मृत्यु के बाद जीव के साथ 18 वस्तुयें जाती हैं। पन्द्रह वस्तुओं के नाम तो बता चुके परन्तु शेष 2 न बता पाए तो श्रोताओं में बैठा एक किसान बोल पड़ा- "मन व बुद्धि भी साथ जाते हैं।" उस समय के आर्यों के स्वाध्यायशील होने का यह प्रमाण है।

चूना भट्टियाँ, सिटीसेन्टर के निकट,
यमुनानगर-165002 (हरियाणा)

झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नही होता

-ललित गर्ग

मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है उसका घमंड। अहंकारी व्यक्ति सोचता है कि यदि वह किसी के सामने झुक गया तो लोग उसे छोटा और कमजोर समझकर उसकी उपेक्षा करेंगे। लेकिन जीवन की वास्तविकता यह नहीं है। झुकने वाला व्यक्ति कभी छोटा या कमजोर नहीं होता। वह और बड़ा और मजबूत बन जाता है। फल से लदी हुई डाल झुकी होती है और बड़ी सहनशील भी। अहंकार और दंभ के कारण ही राजकुमार होते हुए भी दुर्योधन अपनी प्रभुता स्थापित नहीं कर सका। पद के अनुरूप प्रतिष्ठा अर्जित करना तो दूर, वह लोगों की नजर में भी गिर गया था। बड़ा तो वह है जो दूसरे के अधिकार की रक्षा करता है। दूसरे को सम्मान देकर अपने सम्मान को बढ़ाता है। दूसरे को नीचा दिखाकर हम कभी बड़े नहीं बन सकते।

अपने समय के मशहूर कवि रहीम बादशाह अकबर के दरबार में न केवल मंत्री के रूप में मौजूद थे बल्कि वे उनके नवरत्नों में भी एक थे। इतने ऊँचे पद पर होते हुए भी वह कच्ची झोपड़ी में ही रहते थे। वह बेहद सादा जीवन जीते थे। अपने वेतन का ज्यादातर हिस्सा वह दान-पुण्य आदि पर खर्च कर देते थे। अभिमान उन्हें छू तक नहीं गया था। अपनी गर्दन हमेशा नीची रखते हुए वह हरदम सरल ही बने रहते थे। एक बार किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा- 'इतने ऊँचे पद पर होते

हुए भी आप सदा नीचे की ओर मुख क्यों किए रहते हैं? इतना अधिक दान-पुण्य करते है, फिर भी आपकी नजरें ऊपर की ओर क्यों नहीं उठतीं? विनम्रता के धनी रहीम ने जवाब दिया- "देने वाला तो कोई और है जो दिन-रात भेजे जा रहा है। भ्रम में लोग मुझे श्रेय दे रहे हैं। इसलिए संकोच के कारण मेरी नजरें नीची ही रहती हैं।

भगवान बुद्ध के परम शिष्य आनंद ने एक बार डरते-डरते उनसे पूछा - 'प्रभो, प्रवचन देते समय आप तो उच्च आसन पर बैठते हैं, लेकिन श्रोताओं को नीचे बैठकर सुनना पड़ता है। क्या यह गुरु शिष्य में भेद की स्थिति पैदा नहीं करता?' बुद्ध ने मुस्कराते हुए कहा- 'आनंद, क्या तुमने कभी झरने का जल पिया है?' आनंद ने उत्तर दिया- 'हाँ, अनेक बार पिया गुरुदेव।' इस पर गुरुदेव ने कहा, 'तब क्या तुमने देखा नहीं कि जल हमेशा ऊपर से नीचे की ओर ही गिरता है। उसे नीचे रहकर ही पीना पड़ता हैं। मान लो, तुम किसी पहाड़ी पर खड़े हो, तो क्या यह संभव हे कि वहीं से नीचे बह रही नदी का जल पीने की तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए?'

नीचे रहकर ही किसी वस्तु को प्राप्त किया जा सकता है। दार्शनिक रस्किन ने सच ही कहा है कि विनम्रता किसी भी महान व्यक्ति के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता होती है।

Dayananda's Clarion Call

"Our brothers, the Shastries (priests and religious teachers & leaders) are stubborn. This is indeed a great curse for all of us. Many of the teachings and practices of the Vedas no longer exist in our country Bharat-Khanda. And whatever a little that remains is dying out due to lack of interest from our part and also due to blind faiths and evil practices. Superstitions are spreading unchecked. We have neglected the Vedas and the books composed by the Rishis. Instead we have sunk deep into the Purananas and we have accepted their imaginary and unreal tales to be our dharma. If someone will ask me - is there any solution to this madness? I will say - Yes, there is and with the blessings of God this disease can be cured. We have to translate the ancient scriptures like the Vedas and the six Darshanas (the six systems of Vedic Philosophy) in different languages, so that all people can easily get acquainted with the ancient wisdom. The educated persons shall have to assume some responsibilities and come forward to preach the right knowledge about dharma. Arya Samaj should be established in each and every village and effort should be made to stop evil practices like idol-worship. At the same time, the practice of brahmacharya should be encouraged and the people of the different varnas and ashramas should work diligently to increase their physical and spiritual strength. Thus, the ignorant mass will easily come to know, that is, their eyes will be able to see the right picture of dharma and the desperate plight in which we can be destroyed and the right dharma may be established on this earth again. One person like me, with all his weaknesses and shortcomings cannot do all these alone. That is why, I have many expectations from the learned persons and I hope that they will join hands with me in this endeavor and provide help honestly. Om! Shantih Shantih Shantih!"

And as such, Dayananda can rightly be called the father, may be grandfather of the builders of nation in India. His was the eye of realism rather than idealism. Idealist does not at all help to build up a nation. Hindus today are fallen, disunited, weak and more dead than alive because they have not yet accepted this six-fold scheme of Dayananda. But today or tomorrow, Hindus shall have to accept this path, if at all they want to rise once again. There is no way other than this. The more delay they cause, the heavier price they shall have to pay for it.

Let us now complete this narration in the words of that great international fame, Sri Aurobindo, who about Dayananda says:

"May his (Dayananda's) spirit act in India pure, unspoilt, unmodified and help to give us back that of which our life stands especially in need, pure energy, high clearness, the penetrating eye, the masterful, hand, the noble and dominant sincerity".

आर्यन अभिनन्दन समारोह

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस बार भी 17 सितंबर-2017 को दिल्ली में आर्यों का अभिनन्दन किया जाएगा।

1. जो आर्य व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे हैं, पत्रिका निकाल रहे हैं, प्रस्तक विक्रेता हैं।
2. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भाई आदि वेद प्रचार में लगे हैं।
3. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में 25 वर्ष या उससे ज्यादा समय में बैठकर सेवा कर रहे हैं।

हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण लिखकर भेजने की कृपा करें।

पता-ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए-41, लाजपत नगर-द्वितीय, निकट मेट्रो स्टेशन)
नई दिल्ली-110024
फोन-011-45797752, 29842527, 9599107207

Dayananda - a social reformer with a Crusading zeal

-Dr. S. Radhakrishnan

"Among the makers of modern India, the chief place will be assigned to him (Dayananda). At a time when there was spiritual confusion in our country, when many of our social practices were in the melting pot, when we were overcome by superstition and abscurantism, this great soul came forward with staunch devotion to truth and a passion for social equality and enthusiasm, and worked for the emancipation of our country, religious, political, social and cultural..... Swami Dayananda Saraswati was one who was guided by the supremacy of reason and he made out that the Vedic scriptures never asked us to take anything on trust but to examine everything, and then come to any kind of conclusion..... So he (Dayananda) was a social reformer who had a crusading zeal, a powerful intellect and a fire in his heart when he looked at the social injustices. He tried to sweep them away with a drastic hand. This is also what the country requires today..... In that way he emphasized the rule of reason and pointed out that there is one supreme God. He also gave freedom of conscience."

(This is a part of the lecture delivered by Maharshi Dayananda Saraswati at Pune on third August 1875.)

- "It is not wrong to be ignorant; it is an error to continue to be an ignorant."
- "You want to change others so that you can be free. But, it never works that way. Accept others and you are free."
- "A Person who consumes the least and contributes most is a mature person, for in giving lies the self-growth."

-Swami Dayananda Saraswati

Date of Pubn. : 30.6.2017 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3July. 2017
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीषुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

ऋषिः–शिवसंकल्प, देवता–मनः, छन्द–त्रिष्टुप्

अर्थ– जिस प्रकार एक कुशल सारथी रथ के घोड़ों को लगाम से चलाता है। वह कभी लगाम को कसता है और कभी ढीला करता है उसी प्रकार जो मनुष्यों को चलाता है वह मेरा मन जो हृदय के अन्दर बैठा, अजर और अत्यंत वेगशाली है, वह सदैव शुभसंकल्प अर्थात् उत्तम विचारों वाला हो और हमेशा हमारा मार्गदर्शन करता रहे।

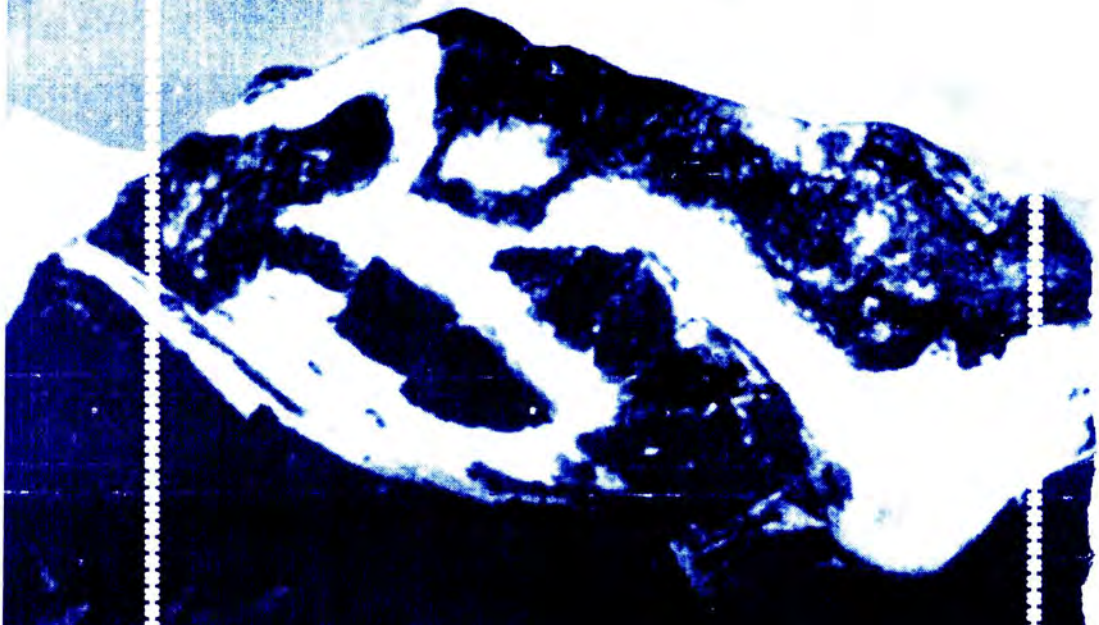

Just as an expert coach man controls the reins and directs his horses, so also our mightly mind controls our actions. May my restless and fickle mind always remain full of noble thoughts.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58